International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications
ISSN: 2319-7471, Volume 6 Issue 12, December-2017, Impact Factor: 3.578

कहानियों में नारी चेतना

डा0 अनीता कुमारी

(असिस्टेन्ट प्रोफेसर), राजकिय महाविद्यालय, भिवानी

शोध लेख सार

नारी चेतना का अर्थ यह नहीं है, कि उसे पारिवारिक बंधनों से मुक्त होना है, और अपने दायित्वों से मुँह मोडकर स्वच्छ जीवन बिताना है अपितु उसे अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण रूप से जागरूक होना है। उसे रूढियों परम्पराओं की गुलामी के लिए जोर जबरदस्ती न करनी पडे। उसे अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए पुरूष की भांति ही सुविधा और अवसर प्राप्त हों। उसकी और मानवीय दृष्टि से देखा जाए। पुरूष नारी के साथ आत्मीयता का छलावा कर अमानवीय व्यवहार करना अपना धर्म समझता चला आ रहा है। किन्तु अब चेतना के स्वर बदले हैं और नारी ने अपने अस्तित्व के अर्थ को समझा है, और इसने संकल्प लिया है कि सबको मानवता का अर्थ समझाना है।

मुख्य–शब्द नारी चेतना, समाज सुधारक, संस्कृति, वैदिक काल।

डा0 मृणाल पाण्डे के अनुसार ''समाज में स्त्रीत्व की मूल अवधारणा नकारात्मक है। लगभग सभी धार्मिक और दार्शनिक दायरे में स्त्री को पुरूष के संदर्भ में एक अपूर्ण और सापेक्ष जीवन के रूप में देखा गया है।''[1]

पुरूष ने नारी को कभी सम्मानपूर्वक नजरों से नहीं देखा। वैदिक काल में नारी शिक्षित और स्वतंत्र थी। सभी कार्यों में उसका सहभाग था। समाज में से गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। उत्तर वैदिक काल से उसकी अवनति प्रारंभ हुई। उसका दायरा सीमित हो गया। वह चारदीवारी के भीतर कद कर दी गई। उपनिषद काल में उसकी स्थिति में और गिरावट आ गई। मध्यकाल तक आते आते तो उसकी सुरक्षा के नाम पर उसे इतने बंधनो से जकड दिया गया कि उसके स्वतंत्र अस्तित्व का नामोनिशान नहीं रहा।

इस दायित्व को सर्वाधिक महिला कथाकारों ने वहन किया अब तक नारी को नारी मन से नहीं देखा गया था। पुरूष कथाकार अपनी ही दृष्टि से नारी मन को कल्पित करके गढी हुई रचनाएँ लिख रहा था, किन्तु नारी

कथाकारों ने नारी की समस्याओं के चित्रण में उसके जीवन के अभावों और आवश्यकताओं को मुक्त हृदय से व्यक्त किया है।

स्त्रियों की मानसिक गुलामी सामाजिक गतिरोध नारी जीवन के तनाव और संघर्ष आदि तत्वों पर लेखिकाएँ अधिक सजग हैं। नए दशक की लेखिकाओं में उषा प्रियवंदा, मृणाल पाण्डे, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, मन्नू भण्डारी, मैत्रेयी पुष्पा, नमिता सिंह आदि लेखिकाओं ने यथार्थ दीप स्थापित किए हैं। इन लेखिकाओं में यथार्थ की छटपटाहट कहीं बूंद में, कहीं नदी के रूप में, कहीं सागर के रूप में व्यक्त है। ये लेखिकाएँ समझ रही हैं कि अब नारी भोग्या नहीं है। वह भी हाड मांस की बनी हुई एक सक्रिय प्राणी है। वह भी पुरूष की तरह जीने की अधिकारिणी है। सडी–गली परम्पराएँ जीवन को दयनीय बना देती हैं। इसलिए ये अपने साहित्य के माध्यम से सच्चाई व्यक्त करना चाहती है।

आज की नारी न तो पुरूष से आगे निकलना चाहती है और न ही पीछे घिसटना, बल्कि सही मायने में किसी कि पत्नी, माँ, बेटी बनकर जीना चाहती है तथा अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की रक्षा करना चाहती है। समकालीन महिला लेखन नारी के अस्मिता व स्वतंत्र अस्तित्व की खोज का लेखन है। उन्होंने सदियों की चुप्पी को तोडा है। यह पुरानी रूढियों, रीति रिवाजों को मानने के लिए विवश नहीं है। अपने निर्णय वह स्वंय लेती है– ''यानि कि एक बात थी 'मृणाल पाण्डे की' स्त्री व्यक्तित्व की एक अलग पहचान बनाने वाली सफल स्त्रीवादी कहानी है, आज कि स्त्री पति–पत्नी संबंधों की एक साझा संस्कृति चाहती है। जिसमें दोनों का समान योगदान हो। जब पुरूष उसे आज वस्तु बनाकर रखना चाहता है तब यह उसे असहाय होता है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए वह पति को छोड सकती है''।[2]

उषा प्रियवंदा की प्रतिध्वनियाँ में एक स्वतंत्र प्रकृति वाली अत्याधुनिक स्त्री का चित्रण किया है कहानी की वसु बंधनमुक्त होकर स्वतंत्र और स्वछंद जीना चाहती है। वसु व्यवस्था के पाश से मुक्त एक स्वतंत्र और स्वानिर्मित जीवन दृष्टि से जीवन यापन करती है उसकी यह दृष्टि नारी स्वतंत्रता की चरम अभिव्यक्ति है''।[3]

देवयानी एक स्वतंत्र पहचान वाली स्त्री है पति से अलग होकर देवयानी घर आकर हंसते हुए कहती है–''मैं मुक्त हो गई दीदी, अम्मा। मैं मुक्त हुँ अब पूर्ण मुक्त''।[4]

''अब विवाहित स्त्री भी केवल पति की परिणिता बनकर नहीं रहना चाहती। वह एक स्वतंत्र व्यक्ति है। यह बात निरंतर दसकी सोच में है। इसी सोच के कारण विवाह के बाद अगर पति अपने कामों में व्यस्त रहता है या स्त्री की उपेक्षा करता है तब वह अपने अभावों को भरने के लिए सही गलत की परवाह किए बिना अपनी मनचाही जिंदगी व्यतीत करता है राजी सेठ की कहानी 'ढलान' पर की चारू, मृदुला गर्ग की अदृश्य कहानी की वीणा आदि में स्पष्ट महसूस किया जा सकता है।''[5]

''आज का युग प्रत्येक क्षेत्र में जागरण का युग है नारी आज वह नहीं रह गई है, जो कि 50 वर्ष पहले थी। कालान्तर में दसके जीवन व्यवहार और सोचने में तौर तरीको में भारी अंतर आया है। नारी चेतना का अर्थ यह नहीं है कि उसे पारिवारिक बंधनों से मुक्त होना है और अपने दायित्वों से मुँह मोडकर स्वच्छ जीवन बिताना है

अपितु उसे अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण रूप से जागरूक होना है। उसे रूढियों परम्पराओं की गुलामी के लिए जोर जबरदस्ती न करनी पडे। उसे अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए पुरूष की भांति ही सुविधा और अवसर प्राप्त हों, उसकी और मानवीय दृष्टि से देखा जाए। पुरूष नारी के साथ आत्मीयता का छलावा कर अमानवीय व्यवहार करना अपना धर्म समझता चला आ रहा है किन्तु अब चेतना के स्वर बदले हैं और नारी ने अपने अस्तित्व के अर्थ को समझा है, अन्याय के विरूद्य ही चेतना के स्वर मुखरित होते हैं व क्रांति का उद्घोष होता है। नारी हमेशा से शांत रही, पुरूष ने उसको उत्पीडित किया, ग्रस्त किया, उपेक्षित किया परन्तु आज आवश्यकता है, नयें संदर्भों में नारीत्व को नए सिरे से परिभाषित करने की पुनः स्थापित करने की नारीत्व जिसका अपना एक गौरव हो, अपना स्वाभिमान हो अपनी सार्थकता हो जिससे वह समाज में बराबरी की हकदार हो।'' [6]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, मृणाल पाण्डे, पृ0 14

2 समकालीन हिन्दी महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी चेतना, डा0 अर्चना शेखावत, पृ0 78

3 साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी, डा0 सां. मंगल कप्पीकेरे, पृ0149

4 जंगल गाथा : नमिता सिंह, पृ0 86

5 साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी, डा0 सां. मंगल कप्पीकेरे, पृ0 151

6 नील गाय की आँखें, नमिता सिंह, पृ0 40